दिनांक 4 सितम्बर 2016 को स्वर्ण भारत ट्रस्ट, वेंकटाचलम, नेल्लोर की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. स्वर्ण भारत ट्रस्ट की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित समारोह में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। भारत के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री आदरणीय लाल कृष्ण आडवाणी जी के कर–कमलों द्वारा वर्ष 2001 में उद्घाटित इस संस्था ने बीते पन्द्रह वर्षों में ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन, महिला एवं बाल विकास की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है तथा अपनी गतिविधियों एवं कार्यकलापों से सम्पूर्ण भारत का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इस संस्था ने ऐसे कार्य किए हैं जिस पर हम सभी को गर्व का अनुभव हो रहा है। इसके लिए मैं इस न्यास की मैनेजिंग ट्रस्टी सुश्री दीपा वेंकट को बधाई देती हूं।

2. आज हम सब बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि रियो ओलम्पिक की रजत पदक विजेता और देश की गौरव कुमारी पी.वी. सिन्धू और उनके कोच श्री पुलेला गोपीचन्द हमारे बीच उपस्थित हैं। सबसे पहले मैं उन्हें ओलम्पिक में रजत पदक जीतने के लिए बधाई देना चाहती हूं। इसके साथ ही, सिन्धू को खेल रत्न पुरस्कार और श्री पी. गोपीचन्द जी को खेलों में कोचिंग के लिए सर्वोत्कृष्ट ''द्रोणाचार्य पुरस्कार'' प्रदान किए जाने पर मैं सभी देशवासियों की ओर से उन्हें बहुत–बहुत बधाईयां देती हूं। जिस प्रकार आपने उत्कृष्ट खेल से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का मान और गौरव बढ़ाया, उसी प्रकार देश ने ये पुरस्कार प्रदान कर आपका मान और सम्मान किया है। कुमारी सिन्धू की सफलता ने सम्पूर्ण देशवासियों को गौरवान्वित किया है और विशेषकर युवा वर्ग में एक नई प्रेरणा का संचार किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि कुमारी सिन्धू की इस सफलता से प्रेरित होकर हमें भविष्य में और भी कई सिन्धू, साक्षी, दीपा, सायना और सानिया जैसे खेल रत्न प्राप्त होंगे। भारत सरकार की योजना है कि ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ''। इसमें तीसरी बात और जुड़ गई है, वह है ''बेटी खिलाओ''। कु. सिन्धू में कड़ी साधना, अथक परिश्रम, आत्म संयम, लगन, निष्ठा, संघर्ष क्षमता एवं skill इत्यादि कई गुण हैं जो यहां पर बैठे युवाओं और मैं तो कहूंगी कि युवा ही नहीं बल्कि सभी लोगों को अपने जीवन का मूल मंत्र बनाना चाहिए। स्वर्ण भारत ट्रस्ट को भी इस बारे में सोचना चाहिए

कि सर्वांगीण विकास के लिए खेल को प्रोत्साहित करने के लिए वे किस प्रकार से योगदान कर सकते हैं, इस पर विचार करें।

3. सिन्धू की सफलता उनकी अपनी सफलता तो है ही, लेकिन उनके गुरू एवं कोच श्री पी. गोपीचन्द की भी सफलता है। क्योंकि सिन्धू की प्रतिभा को पहचानने एवं उसे निखारने का पूरा श्रेय गोपीचन्द जी को ही जाता है जो स्वयं अपने समय में दुनिया के श्रेष्ठ बैडमिंटन खिलाड़ी रहे हैं और उन्होंने वर्ष 2001 में ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैम्पियनशिप जीता था। श्री गोपीचन्द अपने खिलाड़ियों के खेल को सुधारने के लिए स्वयं जितना कठिन परिश्रम और साधना करते हैं वह किसी तपस्या से कम नहीं है और यह बहुत उपयुक्त भी है कि द्रोणाचार्य जैसे महान तपस्वी गुरू के नाम पर स्थापित पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया है। वह उनके सर्वथा योग्य अधिकारी हैं और उनकी सफलता यह बताती है कि यदि मन में इरादे दृढ़ हो तो कोई भी चुनौती असंभव नहीं है।

4. मित्रो! वर्षगांठ किसी भी संस्था के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। किसी भी संस्था का सफलतापूर्वक 15 वर्ष पूरा करना उससे जुड़े लोगों के लिए संतोष और खुशी का अवसर होता है। यह हमारे कामकाज की समीक्षा और भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित करने का भी अवसर होता है। हालांकि कल से गणेशोत्सव का प्रारंभ हो रहा है, परंतु मैं देख रही हूं कि आज से ही त्यौहार का माहौल बन गया है। मुझे आशा है कि गणपति देवता स्वर्ण भारत ट्रस्ट के ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन सुनिश्चित करेंगे, चूंकि वे विघ्नविनाशक, संकटमोचक कहे जाते हैं।

5. The primary aim, vision, mission and objective of the Swarn Bharat Trust is to insure comprehensive development and progress of rural areas by sustaining rural culture and traditions. This is remarkable. The common rurual masses are at the core of their activity and they are imparting top class education, health care, skill development and entrepreneurship to ensure life altering positive changes in the lives of villagers.

6. इस संस्था का लक्ष्य ग्रामीण भारत में रहने वाले ग्राम निवासियों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराना, उनके लिए शिक्षा एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के साथ–साथ शहरों और गांवों के बीच अंतर को पाटना है। शायद इसलिए, माननीय श्री वेंकैया नायडु जी को पहले ग्रामीण विकास मंत्री बनाया गया और अब वे शहरी विकास मंत्री हैं।

7. आज भी 70 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या गांवों में रहती है तथा 80 प्रतिशत से भी अधिक निर्धन जनता ग्रामीण क्षेत्र में ही निवास करती है। हमें यह सोचना चाहिए कि क्या तेज गति से हो रहे आर्थिक विकास के लाभ हमारे ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच रहे हैं। हमें विकास के दृश्यमान प्रतीकों यथा गगनचुम्बी इमारतें, अनेक लेनों वाले एक्सप्रेस–वे और राजमार्ग, शहरों की सड़कों पर दौड़ती महंगी कारें, जगमगाते mall और shopping arcade तथा शहरी क्षेत्रों में मध्यम वर्ग के लोगों की उत्कृष्ट जीवन–शैली को देखकर ग्रामीण क्षेत्रों में रह रही बहुसंख्यक जनसंख्या की समस्याओं को नहीं भूल जाना चाहिए। अंततः, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हमारे तेजी से हो रहे आर्थिक विकास के लाभ समाहित रूप से उन गांवों तक भी पहुंचे।

8. इस ट्रस्ट की स्थापना के पीछे भी माननीय वेंकैया नायडु जी की सोच एवं दर्शन स्पष्ट दिखता है जिन्होंने ग्रामीण भारत के उत्थान के प्रयासों को तीव्र गति दी है। नेल्लोर के गर्वपुरुष श्री नायडु जी भारतीय राजनीति में बहुत सम्माननीय व्यक्तित्व हैं। लोक सभा अध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए मैंने उन्हें और करीब से जाना है। उनमें गजब की संगठन क्षमता है। वे काफी ऊर्जा एवं स्फूर्ति से भरपूर हैं और पार्टी एवं सरकार द्वारा उन्हें दी गई सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन वे अथक परिश्रम एवं अत्यन्त कुशलता के साथ करते हैं। उनकी एक खासियत जो उन्हें संसद एवं मीडिया में लोकप्रिय बनाती है, वह है उनकी presence of mind और sense of humour. वे किसी भी जटिल परिस्थिति को अपने sense of humour से सरल एवं सहज बना देते हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों से संवाद स्थापित करने एवं आम सहमति तैयार करने में उनकी कार्यकुशलता का कोई सानी नहीं है। सभी पार्टी के लोग उनका बहुत आदर और सम्मान करते हैं। वे सभा में शालीनता और मर्यादा के हिमायती हैं। उनमें परिस्थितियों का अन्दाजा लगाने की विशेष काबिलियत है। चूंकि वे ग्रामीण क्षेत्र से

अपनी जड़ों से जुड़े हैं, चाहे संसद में हो अथवा संसद से बाहर, उनका ध्यान सदैव इसी बात की ओर रहता है कि किस प्रकार ग्रामीण विकास को गति दी जा सके।

9. उनकी पुत्री सुश्री दीपा वेंकट भी अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए निरंतर समाजसेवा का कार्य कर रही हैं एवं स्वर्ण भारत ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में कार्य करते हुए ग्रामीण भारत के पिछड़े एवं कमज़ोर वर्गों के व्यक्तियों के निरंतर उत्थान के कार्य में लगी हैं। अर्थशास्त्र में पोस्टग्रेजुएट दीपा को हाल ही में जूनियर चैम्बर इंटरनेशनल ने ''मानवीय एवं स्वैच्छिक नेतृत्व (Humanitarian and Voluntary Leadership)'' की श्रेणी में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। वे अपने पिता एवं महात्मा गांधी जी से विशेष रूप से प्रभावित हैं। गरीबों एवं समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों का कल्याण उनके जीवन और कार्य की प्रेरणा हैं जिनका वे शुद्ध अंतःकरण से अनुकरण कर रही हैं। यही उन्हें गरीबों के लिए सोचने और उनके लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

10. स्वर्ण भारत ट्रस्ट ने पिछले 15 वर्षों में कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। संस्था ने बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अक्षरा विद्यालय और स्वर्ण भारती विद्या मंदिर की स्थापना की है। अक्षरा विद्यालय के बारे में एक बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया जो इस संस्था की कार्यप्रणाली के बारे में हमें बताता है। "Medium is English: Culture is Indian" यह एक वाक्य इस संस्था की कार्य संस्कृति, भाव एवं प्रेरणा सूत्र को अभिलक्षित करता है।

11. इस संस्था ने स्वरोजगार के विकास को ध्यान में रखकर Swarn Bharti Institute of Rural Entrepreneurship Development नामक संस्था की स्थापना की है और ग्रामीण युवकों के लिए बेहतर रोजगार की व्यवस्था करने के उद्देश्य से एक स्वशक्ति नामक योजना चलाई गई है।

12. इस ट्रस्ट ने ग्रामीण क्षेत्रों में हेल्थ केयर सेंटर, डेंटल हॉस्पीटल एवं ग्रामीण आई केयर सेंटर खोले हैं जिसमें कम खर्च पर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है। ग्रामीणों के स्वास्थ्य की देखभाल इनके सर्वोच्च निर्धारित लक्ष्यों में से एक है।

13. वहीं Cyber Grameen नामक योजना के माध्यम से ग्रामीणों को डिजीटल रूप से साक्षर बनाया जा रहा है ताकि वे तकनीक का लाभ उठा सकें। अब तक ऐसे 1800 व्यक्ति ने इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। आने वाला युग तकनीक आधारित युग है। Technology के कारण आने वाले समय में व्यापक बदलाव होंगे। डिजीटल रूप से साक्षर होने से मानव संसाधन का कौशल विकास होगा एवं वे अधिक धन उपार्जन कर सकेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संस्था ने अपने कार्यों के संचालन के लिए स्वयं ही वित्त का प्रबंधन किया है। यह वास्तव में प्रशंसनीय है।

14. हमारे देश की सरकार भी ग्रामीणों की दशा को सुधारने के लिए प्रयत्नशील है। सरकार गांव में पाठशालाएं व अस्पताल खोल रही है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्राइमरी, secondary व tertiary व्यवस्था का सुदृढीकरण हो रहा है। कौशल विकास से उनकी आत्मनिर्भरता बढ़ रही है। कृषि में सुधार और सामाजिक चेतना से विश्व पटल पर भी इस बात की चर्चा हो रही है और इन विषयों पर SDG के तहत नीतियां बनाई जा रही हैं कि ग्रामीण इलाके कैसे विकसित हों? 2030 तक अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण गरीबी मिटाने का सबसे सशक्त शस्त्र है। End poverty, zero hunger, responsible consumption and production इन विषयों पर अब सबको मिलकर काम करना है। तकनीक और डिजीटल क्रांति का लाभ उठाते हुए हमें यह कार्य समयबद्ध तरीके से करना है।

15. मुझे अवगत कराया गया है कि उक्त ट्रस्ट समय–समय पर कई फेस्टिवल का भी आयोजन करती है जिसमें विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, संगीत, नृत्य इत्यादि के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके लिए मैं दीपा जी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि उन्होंने अपने प्रबंधन में इनको प्रमुखता से स्थान दिया। सांस्कृतिक समृद्धि और आध्यात्मिकता का अद्भुत समागम हमारी परम्पराओं में है और मैं चाहूंगी कि इसे सदा–सर्वदा अक्षुण्ण बनाए रखा जाए एवं इसमें और श्रीवृद्धि की जाए।

16. आज यहां की यात्रा करने के बाद मैं आश्वस्त हूं कि यदि इरादे नेक और दृढ़ हों तो सरकारी सहायता पर निर्भर हुए बगैर भी किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया जा सकता है। हमें युवाओं के जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन लाना है और उन्हें हर दृष्टि से सक्षम बनाना है

और एक सक्षम युवा समाज एवं प्रशासन तंत्र पर निर्भर होने की बजाय दूसरों को सक्षम बनाने एवं समाज और राष्ट्र की प्रगति में और अधिक योगदान दे सकता है।

17. माननीय वेंकैया जी और उनके साथियों द्वारा आज से 15 वर्ष पूर्व रोपा गया छोटा–सा पौधा आज विशाल वृक्ष बन गया है एवं आंध्र प्रदेश के ग्रामीण भाग को सेवा प्रदान कर रहा है। यह अत्यन्त प्रेरणादायी है। हरेक कार्य में समय लगता है। लेकिन, यदि कार्य की दिशा और दशा सही हो, तो अंततः वह सुपरिणाम देती है। इस प्रकार के और भी संगठन की ग्रामीण भारत में कार्य करने की आवश्यकता है जो बिना किसी लाभ के, बल्कि सेवा भाव से ग्रामीण भारत के उत्थान में लगे और उन्हें समुचित सुविधाएं प्रदान करें, तो इसमें कोई शक नहीं कि शीघ्र ही हम विश्व के अग्रणी देशों में सम्मिलित हो जाएंगे। आज के बदलते परिवेश और तीव्र गति से विकास सुनिश्चित करने के लिए सरकारी संसाधनों के साथ–साथ सामाजिक संस्थाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, निजी संस्थाओं, गैर सरकारी संगठनों तथा स्वर्ण भारत ट्रस्ट जैसे बिना वित्तीय मदद लिए सेवा करने वाले संस्थाओं की भागीदारी आवश्यक है। इन सभी के सम्मिलित प्रयासों से ही गांवों के सर्वांगीण विकास संभव है।

18. आपकी संस्था की पन्द्रहवीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह सभी आयोजकों को और अधिक मनोयोग से समाजसेवा के कार्य करने की शक्ति दे। कल से गणेश चतुर्थी का त्यौहार आरंभ होने वाला है। मैं इस अवसर पर आप सभी को गणपति उत्सव की शुभकामनाएं देती हूं। स्वर्ण भारत ट्रस्ट के जुड़े सभी लोगों का मैं पुनः अभिनन्दन करती हूं एवं उन सभी की इस खूबसूरत आयोजन के लिए प्रशंसा करती हूं।

धन्यवाद।